बाबा बोलता है

(नाटक का क्षेत्र विशाल हिंदोस्तान है। समय पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद का है। विषय प्रधान मंत्री की हत्या के बाद दिल्ली और देश के अन्य स्थानों की घटनाएं हैं, जब एक धर्म के लोगों का कत्लेआम किया गया, उनके घरों को लूटा गया और उनकी जायदाद को जलाया गया। मंच पर एक अखबार बेचने वाला आता है।)

अखबारवाला : आज की ताज़ा ख़बर... जो कल ताज़ा नहीं रहेगी, परसों बासी हो जाएगी और तरसों भुला दी जाएगी... हत्या कर दी गई।

(तीन-चार आदमी अखबार लेते हैं। बाबा दाखिल होता है, उसके कंधे पर बड़ा थैला लटका हुआ है। हाथ में सामान है। लम्बे सफर से आया लगता है। पैरों में डाली जूती धूल से अटी पड़ी है।)

बाबा : हत्या कर दी गई ?

सभी : हां, हत्या कर दी गई।

अखबारवाला : पैसे खर्च करो... अखबार लो... हत्या कर दी गई, बहुत बड़ी शख़्सीयत की।

बाबा : बहुत बड़ी शख़्सीयत की ?

अखबारवाला : हां, पैसे खर्च करो... अखबार लो... हत्या कर दी गई, बहुत बड़ी शख़्सीयत की... जिसके नाम से देश जाना जाता था।

बाबा : जिसके नाम से देश जाना जाता था ?

सभी : हां बाबा... जिसके नाम से देश जाना जाता था।

अखबारवाला : *(दूसरी तरफ)* बाबा बड़ा कंजूस है... पैसे नहीं खर्च करता, ख़बर सारी पूछता है... *(बाबा से)* बाबा हत्या कर दी गई... बड़ी शख़्सीयत की... जिसके नाम से देश जाना जाता था, अपने

ही घर में हत्या कर दी गई।

बाबा : अपने ही घर में हत्या कर दी गई... बहुत बुरी बात हुई।

अखबारवाला : क्या बुरी बात हुई ?

बाबा : अपने ही घर में हत्या कर दी गई।

अखबारवाला : किसकी ?

बाबा : जिसका नाम देश में जाना जाता है।

अखबारवाला : किसका नाम देश में जाना जाता है ?

बाबा : जो बड़ी शख़्सीयत थी।

अखबारवाला : कौन बड़ी शख़्सीयत थी ?

बाबा : जिसकी हत्या कर दी गई।

अखबारवाला : किसकी हत्या कर दी गई ?

बाबा : यही तो मैं पूछता कि किसकी हत्या कर दी गई ?
(सभी हंसते हैं।)

अखबारवाला : (दूसरी तरफ) बाबा बड़ा चालाक है मुफ्त में ख़बर पूछता है पर बताऊंगा मैं भी नहीं... *(बाबा से)* बाबा सरकारी झंडे झुका दिए गए हैं।

बाबा : झुके रहें... हमें क्या फर्क पड़ता है ?

अखबारवाला : रेडियो पर गातमी धुन बज रही है।

बाबा : क्या रेडियो वालों का कोई स्वर्ग सिधार गया है ?

अखबारवाला : स्वर्ग सिधार नहीं गया... सिधार गई है... टेलीविज़न उसकी मृत देह पर फोकस है।

बाबा : क्या पहले टेलीविज़न जीवित आदमियों पर फोकस रहता है ?

अखबारवाला : बाजार में हड़ताल है।

बाबा : मुझे कौन सा सोंठ खरीदनी है।

अखबारवाला : प्रदेशों के बड़े-बड़े नेता पहुंच रहे हैं।

बाबा : क्यों उनकी मां मर गई है ?

अखबारवाला : उनकी मां नहीं, सारे देश की मां मर गई है।

बाबा : मां मर जाए तो क्या होता है।

अखबारवाला : देश यतीम हो जाता है।

बाबा : यह देश पहले से ही यतीम है।

अखबारवाला : क्या मतलब ?

बाबा : यह देश सदियों से यतीम है... कोई है इसकी सार संभाल करने

वाला ? इसी कारण तो भूखे, नंगे लोग लाखों की गिनती में मरते हैं... जो भूखे नहीं हैं वे सिर्फ अखबार पढ़ते हैं और आपस में लड़-लड़कर मरते हैं... *(अखबार पढ़ रहे पात्र बाबा को घूरते हैं और मंच से बाहर चले जाते हैं)* ख़बर यहां एक ही है, कल भी यही थी, आज भी यही है... कल भी यही होगी। अब यह मत कहना बाबा कंजूस है, पैसे नहीं खर्च करता... ये ले पैसे... अखबार झोले में डाल दे।

अखबारवाला : *(झोले में अखबार डालता हुआ)* बाबा... यहां तो पहले से ही बहुत सारी अखबारें हैं।

बाबा : अखबारें नहीं, ज़िंदगी का निचोड़ है... अब बता तेरी ख़बर क्या है ? यही कि हत्या हो गई है... एक शख़्सीयत की जिसके नाम से देश जाना जाता था। घर में हत्या कर दी गई... सरकारी झंडे झुके हुए हैं... रेडियो पर मातमी संगीत है, टेलीविज़न उसके मृत शरीर पर फोकस है... बाजार में हड़ताल है... प्रदेशों से बड़े-बड़े लोग आ रहे हैं।

अखबारवाला : *(ऊंची आवाज़ में)* बाबा प्रधानमंत्री की हत्या हो गई है।

बाबा : *(प्रभावित हुए बिना)* अच्छा तो फिर... उसका पुत्र प्रधानमंत्री बन गया है।

अखबारवाला : उसने लोगों को शांत रहने के लिए कहा है।

बाबा : और लोग आगजनी कर रहे हैं।

अखबारवाला : बाबा, तुझे सारी ख़बरें पहले-

बाबा : क्योंकि मैं ख़बरों में से ख़बरें पढ़ने का तरीका जानता हूं।

अखबारवाला : वो किस तरह ?

बाबा : तू अपनी ख़बर पढ़... मैं अपनी ख़बर सुनाता हूं।

अखबारवाला : *(अखबार पढ़कर)* प्रधानमंत्री ने लोगों से कहा है कि देश में शांति बनाए रखें।

बाबा : इसका मतलब है देश में बड़े पैमाने पर दंगे हो रहे हैं।

अखबारवाला : सरकार गरीबी के ख़िलाफ़ ज़ेहाद छेड़ने का इरादा रखती है।

बाबा : इसका मतलब है गरीबी से करोड़ों लोग मर रहे हैं... *(ज़ोर देकर)* मेरी बात सुन... अगर प्रधानमंत्री कहे कि बेरोजगारी दूर कर दी जाएगी तो इसका मतलब है कि सड़कों पर बेरोजगारों की गिनती बढ़ गई है। अगर प्रधानमंत्री कहे कि सरकारी प्रबंधन

में भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा तो समझ ला कि भ्रष्टाखर शिखर पर पहुंच गया है... अगर प्रधानमंत्री कहे कि देश की एकता कायम रखी जाएगी तो इसका मतलब है कि देश टुकड़े-टुकड़े होने के कगार पर है... *(चलते हुए)* आज के लिए इतना ही काफी है।

अखबारवाला : नहीं बाबा... इस तरह नहीं, बता, इस थैले में क्या है?

बाबा : तेरी मां का सिर *(बदलकर)* सन् सैंतालीस का इतिहास है... सन् चौंसठ का इतिहास है... सन् चौरासी का इतिहास है।

अखबारवाला : सैंतालीस, चौंसठ, चौरासी इनका क्या ताल्लुक है?

बाबा : सैंतालीस में दंगे हुए... घर जले, निर्दोष मरे... बच्चे यतीम हुए, सुहागिनें विधवा हुईं... सैंतालीस में जिनका राज था उनका चमड़ी सफेद है। चौरासी में जिनका राज है उनका खद्दर सफेद है। वक़्त की चक्की उसी तरह चलती रही... पर लोग पिसते रहे, हाकिम गद्दी पर काबिज रहे।

अखबारवाला : बाबा 1964 और 1984 का क्या ताल्लुक हुआ?

बाबा : 1964 में बाप मरा था, बेटी गद्दी पर बैठी थी... 1984 में मां मरी... बेटा गद्दी पर बैठा है... सत्तर करोड़ लोग, एक ही खानदान का राज... बाकी सारे फोकम-फोक।

अखबारवाला : बाबा बड़ा पंगेबाज है... बातें करता भी है और बातें बनाता भी है।

बाबा : पुत्तर! ज़ख़्म खाए हैं... 1947 में बाप गंवाया, 1984 में बेटी का सुहाग गंवाया... 1947 में मां विधवा हुई, 84 में बेटी विधवा हुई, 47 में मैं यतीम हुआ था... आज दोहता यतीम हुआ है। अजीब इत्तिफाक है, उस वक़्त एक नाना गद्दी पर बैठा... आज एक दोहता गद्दी पर बैठा है... अब यह मत कहना बाबा बातें बनाता है...। बाबा पर जो बीती... बाबा वही सुनाता है।

(छुक-छुक की आवाज़ आती है और सारे पात्र एक रेलगाड़ी का-सा दृश्य बनाते हैं। छुक... छुक... छुक- अचानक रुक जाती है। तीन मुसाफिरों को उतारकर उन पर पेट्रोल डाला जाता है। बाबा आग को बुझाना चाहता है, पर उसे खींचकर परे फेंक दिया जाता है। यह सब कुछ मूक अभिनय से हो रहा है तो पीछे से ख़बरें सुनाई देती हैं।)

एक ख़बर : आज की ताज़ा ख़बर... दिल्ली से बाहर तुगलकाबाद स्टेशन पर राजधानी एक्सप्रेस में से एक ही धर्म के तीन मुसाफिरों को बाहर निकालकर उन पर पैट्रोल छिड़ककर जला दिया गया।

दूसरी ख़बर : रेलमंत्री का बयान है कि देशभर में रेलगाड़ियों के यातायात में कोई विघ्न नहीं पड़ा... हालात सामान्य हैं।

तीसरी ख़बर : रेलमंत्री ने विश्वास दिलाया है कि रेल के सभी यात्रियों को पुलिस और फौज़ द्वारा पूर्ण सुरक्षा दी जाएगी।

बाबा : *(जली लाशों की राख उठाता हुआ)* सुरक्षा की जाएगी या राख कर दिया जाएगा... नहीं, राख कर दिया गया। हां राख हो गया, देश का कानून, देश का ईमान, देश का विधान... इस देश में हर एक को इज्ज़त से जीने का हक़ है... राख हो गया... *(बदलकर)* छिड़क दो, इस राख को हिमालय पर्वत पर, बहा दो इस राख को गंगा नदी में, डुबो दो... इस राख को कन्या कुमारी के गहरे समंदर में... *(बदलकर)* कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हम सब एक देश के वासी हैं *(तंज़ करके)* पर अपने ही देश में बने प्रवासी हैं।

(बाबा जब यह बोल रहा है तो मुर्दा शक्ल में पड़े व्यक्ति मंच से बाहर चले जाते हैं। वे दोहराते हैं, अपने ही देश में बने हम प्रवासी हैं।)

(मंच के दूसरी ओर से एक कांग्रेसी नेता दाखिल होता है, उसके पीछे-पीछे उसके इशारे पर चलने वाला लंपट गुण्डा है।)

कांगेसी नेता : क्यों हरीचंद, क्या प्रोग्रेस है ?

हरीचंद : बड़ी प्रोग्रेस है... तीन पगड़ी वाले सरदारों को गाड़ी से उतारकर 'गाड़ी चढ़ा दिया' है... चार टैक्सियों को आग लगाकर स्वाहा कर दिया, आठ घरों को जलाया है और सिक्खों को सबक सिखाया है।

कांगेसी नेता : बहुत खूब... अब मैं प्रधानमंत्री से कह सकूंगा कि जब कोई दरख़्त गिरता है तो ज़मीन हिलती है... तुझे इनाम दें ?

हरीचंद : मालिक... आज ज़रूरत नहीं... पहले ही बहुत इनाम मिल गया है, लूट का काफी माल हाथ लगा है।

कांग्रेसी नेता : क्या-क्या ? हम भी तो सुनें।

हरीचंद : रेशमी साड़ियां... ट्रांजिस्टर, वी.सी.आर., स्टील के बर्तन, सोने के गहने और दस हजार नकद।

कांग्रेसी नेता : पुलिस वालों ने तो कुछ नहीं कहा?

हरीचंद : ऊपर-ऊपर से कह रहे हो- भागो-भागो... पर धीरे-धीरे कह रहे थे- जलाओ, जलाओ। तेल में डबलरोटी हम भिगोते थे और आग के लिए माचिस वे जलाते थे। बड़ी मौज थी, बेशक हर जगह फौज ही फौज थी।

कांग्रेसी नेता : यानी फौज और पुलिस ने अपना फर्ज़ निभाया है!

हरीचंद : फर्ज़ भी निभाया है और लूट में हाथ भी बंटाया है।

कांग्रेसी नेता : हमें यही उम्मीद थी।

हरीचंद : मालिक... अब आगे क्या हुक्म है?

कांग्रेसी नेता : इशारे का इंतजार करो... अगला प्रोग्राम शायद अब शांति मार्च का होगा।

हरीचंद : शांति मार्च?

कांग्रेसी नेता : हां... शांति जुलूस।

हरीचंद : कितने आदमियों की ज़रुरत होगी?

कांग्रेसी नेता : तेरे ज़िम्मे सौ के करीब होंगे... पर हों सभी भली शक्लों वाले।

हरीचंद : हम तो मालिक हमेशा आपके इशारे के इंतज़ार में रहते हैं... आदमी तो वही होंगे... कल उन्होंने लूटमार में हिस्सा लिया... अब वे शांति मार्च में हिस्सा लेंगे... कल वे गुण्डे थे... आज वे शरीफ हैं।

कांग्रेसी नेता : वो कैसे?

हरीचंद : वो ऐसे *(गले में से रूमाल उतार देता है और बटन बंद कर लेता है... बाल संवार लेता है। झोले में से टोपी निकाल कर पहन लेता है... नारा लगाकर)* ...'हिंदू-सिक्ख को जो लड़वाए,' देश का दुश्मन वो कहलाए, 'हिंदू-सिक्ख, भाई-भाई' आप जुलूस के आगे-आगे चलोगे और हम पीछे-पीछे चलेंगे।

कांग्रेसी नेता : बहुत खूब... अच्छा, अब जा।

(हरीचंद जाने लगता है और फिर वापिस आ जाता है।)

हरीचंद : मालिक?

कांग्रेसी नेता : क्या हुआ?

हरीचंद : अपनी बस्ती के लोग आए हैं।

कांग्रेसी नेता : कौन लोग हैं ?

हरीचंद : जिनके कल घर लूटे गए थे।

कांग्रेसी नेता : अच्छा, तू इधर से निकल... हमारा अगला काम शुरु होता है।

हरीचंद : जी मालिक... *(वह चला जाता है।)*

(कांग्रेसी नेता टेलीफोन घुमाकर झूठा अभिनय करने लगता है। बाबा और दो साथी दरवाज़े पर खड़े हैं।)

कांग्रेसी नेता : *(टेलीफोन पर)* क्या कहा... भीड़ ने सिक्खों की दुकानें जला दी हैं ? पुलिस कहां थी ? एस.एस.पी. साहब को इत्तला करो कि नई फोर्स भेजें एस.एच.ओ. को सस्पेंड करो... सिक्ख भारत के फ़ख्र हैं... उन्होंने देश की आज़ादी में बहुत बड़ा योगदान दिया है... क्या कहा ? भीड़ गुस्से में है कि दो सिक्खों ने हमारी माता इंदिरा जी का क़त्ल किया है... पर वे सिर्फ दो थे... इसके लिए इस धर्म के सभी लोगों को तो कसूरवार नहीं ठहराया जा सकता ? हां, हां... पूरी तरह से कार्रवाई करो। हर हाल में अमन कायम होना चाहिए... फौज तैनात करो... enough is enough ... हां, हां enough is enough ... जो हुआ सो हुआ अब और कुछ नहीं होना चाहिए... कुछ गुण्डे भारत के नाम पर बट्टा लगाते रहें और हम देखते रहें... It is Imposible ... हम अपने हल्के के लोगों की हर कीमत पर सुरक्षा करेंगे बेशक इसके लिए हमें अपनी जान भी कुर्बान करनी पड़े।

(टेलीफोन रखकर वह आए हुए लोगों से मुखातिब होता है। उसका बात करने का अंदाज़ ऐसा है कि वह हर बात को लपक लेता है।)

कांग्रेसी नेता : आओ, अंदर आओ... मुझे बहुत अफसोस है कि समाज के दुश्मनों ने आपके धर्म के लोगों का बहुत नुक्सान किया है... ये ग़लत किस्म के लोग हर मौके का लाभ उठाते हैं।

एक : पर पुलिस...

कांग्रेसी नेता : मुझे पता है है पुलिस वालों ने कुछ नहीं किया... ये लोग अपने फर्ज़ को नहीं पहचानते... बस मुफ्तखोरी सीख गए हैं... अरे हरामखोरो, तुम्हारे सामने भले लोगों के घर जलाए जा रहे हैं... तुम हो कि खड़े तमाशा देख रहे हो... हराम ज़िंदगी की भी हद होती है।

दो : पर थाने वालों ने भी...

कांग्रेसी नेता : थाने वालों ने भी कुछ नहीं किया... मुझे पता चला है कि उन्होंने थाने के टेलीफोन काचोगा उतारकर रख दिया था। मैंने वहां कई दफा फोन किया, No Reply या Engaged... मैं खुद चलकर गया तो एस.एच.ओ. कहने लगा–फोन खराब है। पर मुझे फोन नीचे रखा हुआ दीख गया... मैंने उसके साथ वो की, वो की कि याद रखेगा... साले हमारे साथ ड्रामेबाजी करते हैं... जैसे कि हमें कुछ पता ही नही चलता... हम इस तरह का ड्रामा खुद हर रोज करते हैं *(संभलकर)* देखते हैं, साले हमें चराते हैं कल के छोकरे... *(बदलकर)* बताओ, आपका क्या नुसान हुआ है ?

एक : जी नुक्सान तो...

कांग्रेसी नेता : मुझे पता है बहुत नुकसान हुआ है, उन्होंने घर की एक भी चीज़ नहीं छोड़ी... रेशमी साड़ियां , ट्रांजिस्टर, वी.सी.आर., स्टील के बर्तन, सोने के गहने और कई हजार नकद... पहले घरों को लूटा, फिर आग लगाई... पर हम इस तरह नहीं बैठने वाले, सालों से एक–एक चीज़ निकलवाएंगे... उन्होंने समझ क्या रखा है ? एक–एक को जेल भिजवाएंगे... सरकार नाम की भी कोई चीज़ है इस देश में... बताओ है, या नहीं ? मैं प्रधानमंत्री से आज मिल रहा हूं... मैं उनसे मांग करूंगा कि नुकसान की एक–एक पाई की भरपाई की

दो : पर हम इस वक़्त बिल्कुल बेघर हैं।

कांग्रेसी नेता : मुझे पता है कि आप लोग बेघर हो गए हैं... आपके घर नहीं रहे... ऊपर से सर्दी उतरने को है... आप लोग कहां जाएंगे... इसके लिए सरकार कैंप बना रही है... आखिर सरकार का भी कोई फर्ज़ है... प्रधानमंत्री अपने फंड में से पांच लाख रुपये दे रहे हैं।

दो : पांच लाख... ये रक़म तो...

कांग्रेसी नेता : मुझे पता है पांच लाख इस काम के लिए कोई रक़म नहीं... पर ये तो पहली किश्त है... World Red Cross की तरफ से पैसा आएगा... कंबल भी आएंगे... कोई और बात हो तो बताओ।

एक : बात तो आपने कोई...

कांग्रेसी नेता : बात तो मैंने कोई छोड़ी ही नहीं... आप यही कहना चाहते हो...

आपकी बातें मैं नहीं समझूंगा तो और कौन समझेगा... आपने मुझे चुना है... मुझे पता है कि पिछले चुनावों में आपके धर्म के लोगों ने एकजुट होकर मुझे वोट डाले थे... भारतीय जनता पार्टी वालों को वोट नहीं डाले थे... वो एक फिरका परस्त पार्टी है... सिर्फ हिंदुओं के हितों की रक्षा करती है... हिंदी... हिंदू... हिंदोस्तान... पर हमारी पार्टी धर्मनिरपेक्षता में यकीन रखती है... महात्मा गांधी ने हमें सिखाया था– ईश्वर अल्लाह तेरो नाम... सबको सन्मति दे भगवान।

बाबा : *(जैसे खुद को रोक न पा रहा हो)* आपको महात्मा गांधी ने और क्या सिखाया था?

कांग्रेसी नेता : *(उखड़कर)* क्या मतलब?

बाबा : आपको यही सिखाया था कि लोगों के आगे झूठ बोलो... उन्हें ड्रामाबाजी करके उल्लू बनाओ... हम आपसे भीख मांगने नहीं आए, क्योंकि हमें पता है कि ये जो कुछ भी हुआ है... आपकी साजिशों की बदौलत हुआ है... हम आपसे यह कहने आए हैं कि प्रधानमंत्री की हत्या हुई... हमें खुशी नहीं हुई, कुछ ओछे लोगों ने लड्डू बांटे... यह अच्छी बात नहीं... क्योंकि वे भी मूर्ख थे, जिन्होंने दरबार साहब पर एक्शन के वक़्त लड्डू बांटे थे... जब हजारों बेकसूर मरे... इस देश में दंभ, मूर्खता प्रधान हो गई है... एक तरफ लोग मरते हैं, दूसरी तरफ लड्डू बांटे जाते हैं... लड्डू बांटने वालों के पुत्र नहीं मरे होते... बेटियों के सुहाग नहीं उजड़े होते... बच्चे यतीम नहीं हुए होते... *(जोश में आकर)* हम उन पर लानत भेजते हैं... जो दूसरों की मौत पर लड्डू बांटते हैं... हम लानत भेजते हैं उन पर, जिनके राजपाट में झूठ, क़त्ल, धोखा, और दंभ के सिवा कुछ नहीं रहा– *(यह कहकर बाबा मुड़ता है, कांग्रेसी नेता तिलमिला जाता है... बाबा फिर मुड़कर कहता है)* लानत है, लानत है, लाख लानत है।

(काफी ऊंचे स्वर में कहता हुआ एक तरफ से बाहर जाता है। कांग्रेसी नेता यह कहते हुए– 'एक तो हमारी माता को मार दिया, दूसरा हम पर ही लानत भेज रहे हैं', बाहर निकल जाता है। जत्थेदार, बाबा और दो सिक्ख अगले दृश्य के लिए आते हैं।)

जत्थेदार : सिक्ख कौम संकट में है... पंथ को खतरा है।

बाबा : क्या कहा जत्थेदार जी ?

जत्थेदार : पंथ को खतरा है।

बाबा : *(तंज़ से)* पंथ को हमेशा खतरा ही रहा है।

जत्थेदार : क्या मतलब सिंह जी ?

बाबा : जत्थेदार जी, देश को आज़ाद हुए 37 बरस हो गए हैं... सरकार हमेशा कहती रही है कि देश को खतरा है, दूसरी तरफ जत्थेदार जी आप लोग कहते रहे हो कि पंथ को खतरा है।

एक : खतरा पंथ को नहीं... खतरा अब हमें हैं।
हमारा भारत में रहना मुहाल हो गया है

दो : ये भी कोई जीना है... हमें चुन-चुन कर मारा जाए... हमारी जायदाद जलाई जाए... इस देश के लिए हमने क्या नहीं किया ?

बाबा : क्या किया... किसी ने कुछ नहीं किया देश के लिए... सबने अपने लिए किया है।

एक : बाबा जी, आप तो हमेशा उलटी बात ही करते हो... अगर हमने नहीं किया तो और किसने किया है ?

बाबा : मैं कब कहता हूं कि किसी और ने किया है... किसी ने कुछ नहीं किया, सबने अपने लिए किया है।

दो : बात सोचने वाली यह है कि अब क्या किया जाए ?

बाबा : जत्थेदार जी से पूछो... पर जत्थेदार जी क्या बताएंगे... बीसवीं सदी में जिन्होंने अपनी सारी सियासत धर्म के इर्द-गिर्द बांध रखी है।

जत्थेदार : सिक्खों में धर्म और सियासत कभी अलग नहीं हो सकते... यह हमारे गुरुओं ने कहा है... यह हमारा इतिहास है।

एक : यह तो ठीक कहते हैं... जत्थेदार जी।

बाबा : क्या ठीक हैं... लढोवाल तक का इतिहास पढ़ लिया और बन बैठे बड़े इतिहासकार, लोगों को बुद्धू बनाने के लिए... यह बात गुरुओं ने किस वक़्त कही थी ?

जत्थेदार : किस वक़्त कही थी ?

बाबा : उस वक़्त कही थी जब सारे सिक्ख एक से सिर कटवा सकने वाले सूरमा थे... वे मुगल बादशाह से जब्र और जुल्म के खिलाफ लड़ते थे, औरंगजेब बादशाह कहता था कि हिंदोस्तान में सिर्फ

मुसलमान ही रहेंगे। उस वक़्त लड़ाई धर्मों की थी, इसलिए उसका जवाब भी धार्मिक तरीके से ही दिया गया था।

जत्थेदार : तो फिर क्या हम गुरुओं के फरमान के विपरीत जाएं?

बाबा : गुरुओं का फरमान था, जब्र के विरुद्ध डट जाओ, हक़ के लिए लड़ो। उस फरमान को पूरा करो... तुम्हारे धनाढ्य सिक्खों ने कौन से हक़ों के लिए लड़ना है... जो खुद दूसरों के हक़ छीनते हैं... उन्हें साधारण सिक्खों या दूसरे साधारण लोगों से क्या मतलब है?

जत्थेदार : *(खीज़कर)* ये बाबा जैसे लोग हैं... जो हमेशा पंथ में फूट डालकर खुश रहते हैं।

बाबा : हां, अगर कोई अक़्ल की बात करे तो पंथ में फूट पड़ जाती है, जैसे पंथ कोई मूर्खों की टोली हो... तुम्हें पता होना चाहिए जिस राज में सिक्खों के साथ दंगे फसाद हुए, उसका प्रधान सिक्ख है, उसका मेयर सिक्ख है... अब कह दो कि वे पंथ से बाहर थे।

जत्थेदार : हां... वे पंथ के गद्दार हैं।

बाबा : पर इन गद्दारों को वोट आपने ही डाले थे। क्यों? क्योंकि वे सिक्ख थे... उनके गले में हार डाले... उनको गुरुद्वारों में बुलाकर सिरोपे भेंट किए, बताओ किए थे या नहीं?

एक : पर आप कहना क्या चाहते हो?

बाबा : मैं यही कहना चाहता हूं कि अब वक़्त आ गया है कि सियासत में यह अलग पंथ की रटंत छोड़ो और देश की मुख्यधारा बीसवीं श्ताब्दी की सियासत की नज़ाकत को समझो, यह सियासत धर्मों की नहीं, वर्गों की है। तुम्हारे धर्म की धनाढ्य जमात एक तरफ कांग्रेसी आकाओं से संबंध रखती है, दूसरी तरफ अमृतसर जाकर भिंडरावाला के थैले भरती रही है। कोई तुम्हें एक नारा दे गया कि एक ऐसा देश बनना चाहिए जिसमें सिक्खों का बोलबाला हो, वे जो जागीरदार सरदार हैं, मुज़ारों के खून पसीने की कमाई लूटकर खाते हैं, वे जो बड़े कारखानेदार हैं, मजदूरों की मेहनत पर जीते हैं... पूंजीपति, तुम्हारा इस्तेमाल करके अपना बोलबाला चाहते हैं... वे चाहते हैं बिरला, टाटा की धरती में से एक टुकड़ा उन्हें अलग मिल जाए... जिसके बिरला, टाटा वे खुद हों, इससे ज़्यादा और कोई बात नहीं।

जत्थेदार : पर अब हम उस देश में कैसे रह सकते हैं जिसमें हमारे साथ ऐसा सलूक किया गया हो, हमारा इतना नुक़सान हुआ हो।

बाबा : इस बारे में सोचा जाना चाहिए... यह सोचना बनता है। यह सोचना उस वक़्त भी बनता था, जब पंजाब में निर्दोष लोगों के क़त्ल हो रहे थे।

एक : फिर अब क्या करें?

बाबा : क्या करें? अपने अंदर झांक कर देखो, अपनी सोच बदलो, पहचानो कि इस देश में तुम्हारा दोस्त कौन है? दुश्मन कौन है?

दो : कौन है हमारा दोस्त... कोई नहीं।

बाबा : अगर तुम्हारी यही सोच रही तो सचमुच अपने देश में कोई तुम्हारा दोस्त नहीं रहेगा। बाहरी देशों की तरफ ताकोगे। वे ऊपर-ऊपर से तुम्हारे साथ हमदर्दी दिखएंगे पर अमेरिका ने, कैनेडा ने, इंग्लिस्तान ने, जब हरिमंदिर साहब फौज़ी एक्शन से तबाह हुआ... किसी ने कुछ नहीं किया और न ही कुछ करना उनका बनता था।

जत्थेदार : पर देश में भी तो हमारा कोई दोस्त नहीं।

बाबा : क्यों नहीं... सत्तर करोड़ लोगों का यह देश है... तुम्हारे ऊपर जब दिल्ली या देश के दूसरे भागों में हमले हो रहे थे तो वे लोग कौन थे जो विरोध की आवाज़ उठा रहे थे। मराठी के अखबार खोलकर देखो, जिनमें संपादकीय पर संपादकीय लिखे जा रहे थे कि एक नत्थूराम गोडसे जिसने महात्मा गांधी की हत्या की, उसका यह मतलब नहीं था कि सारे मराठों के लिए भारत में जगह नहीं, वे कौन थे, जिन्होंने अपनी जानें कुर्बान करके कलकत्ता में तुम्हारी रक्षा की है? हां, तुम्हारे दुश्मन हैं वे जो फिरकापरस्त सोच रखते हैं, पर स्वस्थ, डैमोक्रेटिक सोच वाले भी कम नहीं हैं। उनको पहचानो... पर पहचान तभी सकोगे जब अपनी नज़र बदलोगे... अपनी सियासत को आधुनिक रास्तों पर चलाओगे। यह बीसवीं शताब्दी है... पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी नहीं... *(अपने झोले में से एक अखबार निकालकर)* यह ख़बर पढ़ो- पीपुल्स यूनियन ऑफ सिविल लिबर्टीज़, पीपुल्स यूनियन फॉर डैमोक्रेटिक राईटस, इन्होंने विशाल जलसे का आह्वान किया है। किसकी खातिर? तुम्हारी खातिर। क्यों, क्योंकि वे वक़्त के

हाकिमों की असलीयत को समझते हैं। वे जानते हैं कि कल तक जो फौजी बूट नेफा में मिज़ो और नागाओं को कुचल रहे थे, वे ही बूट अब पंजाब में दनदना रहे हैं, फर्क सिर्फ इतना ही है कि वहां ज़्यादातर फौजी सिक्ख थे और यहां फौजी गैर सिक्ख हैं। वे जानते हैं कि वो ताकतें आसाम का मसला हल नहीं होने दे रही वे पंजाब का मसला भी हल नहीं होने देंगी। वे जानते हैं कि इस देश में लूट मचाने वाली ताकतों का राज़ है जो कभी भी नहीं चाहेंगी कि इस देश के लोगों में आपसी एकता हो। ये ताकतें मज़हबी दंगे करवाएंगी, फ़साद करवाएंगी... पर हमें जन शक्तियों की पहचान करनी चाहिए। उन शक्तियों के लोग अपने लोगों को जागृत करने निकले हैं। उनके कदम से कदम मिलाओ, उनकी आवाज़ में आवाज़ मिलाओ... उनके सुर में सुर मिलाओ... धरती का एक टुकड़ा मत मांगो, जहां सिक्खों का बोलबाला हो... बल्कि सारा देश मांगो, जहां क्राति का बोलबाला हो, पर क्या तुम ऐसा करोगे ?

जत्थेदार : छोड़ो जी, ये बाबा कौन-सी बेकार की बातें ले बैठा।

एक : पर बाबा कहता तो सच है।

जत्थेदार : खाक़ सच कहता है... यहां एक मिनट खड़ा होना भी पाप है... *(क्रोध से)* वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फ़तेह।

बाबा : *(उनके पीछे बोलता है।)* वाहेगुरु जी की फतेह... चले जाओ सिंह साहिबान के पास... बाबा को घोषित कर दो तनखैया...। *(अखबार की तरफ आता है। अपनी जगह पर खड़ा हो जाता है। थोड़ा वक़्फा। पहले सीन का दृश्य। आज की ताज़ा ख़बर, जो कल ताज़ा नहीं रहेगी, परसों बासी हो जाएगी, तरसों भुला दी जाएगी। तीन आदमी अखबार लेते हैं। पढ़ना शुरू कर देते हैं।)*

बाबा : बंद कर यह शोर... कहता है ताज़ा ख़बर इस देश में कोई ख़बर ताज़ा नहीं... कोई भी ख़बर नई नहीं। सब पुरानी हैं- हिंदू-मुसलमान फसाद की ख़बर, हिंदू-सिक्ख नफरत की ख़बर, लोकसभा के चुनाव, पैसे का वही चक्कर... लाखों का खेल... गरीब सिर्फ मोहर लगाने वाले। हरिजन बस्तियां जलाने की ख़बर, बेरोजगार नौजवानों की खुदकुशी की ख़बर... आसमान

छू रही मंहगाई की ख़बर, नेताओं के दल बदल की ख़बर... सब पुरानी ख़बरें।

सभी : *(अखबारों में से मुंह ऊपर करके)* हां सब पुरानी ख़बरें।

बाबा : अखबार वाले... कभी तो भले आदमी नई ख़बर लाया कर... इस धरती पर नया सूरज उगने की ख़बर।

सभी : नया सूरज ?

बाबा : हां... जब इस धरती पर मेहनत करने वाले लोग मेहनत की रखवाली के लिए एकसाथ उठ खड़े होंगे... हिंदू भी होंगे, सिक्ख भी होंगे, मुसलमान भी होंगे और वे भी होंगे जो किसी धर्म के नाम से नहीं जाने जाते... उस नये सूरज की ख़बर, जिसका भारत के करोड़ों लोगों को इंतजार है।

(बाबा यह आखिरी संवाद बड़ा ठहर ठहरकर बोलता है और फिर एक तरफ देखता है, जैसे अपनी कल्पना में किसी सूरज को देख रहा है। सब उस तरफ देखते हैं और स्थिर हो जाते हैं।)